राउरकेला-ओडिशा। राजयोगिनी दादी जानकी के जन्मदिवस व पाँच ब्र.कु. बहनों ब्र.कु. पंचमी, ब्र.कु. निरूपमा, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. इतिश्री व ब्र.कु. सीता के समर्पण समारोह में केक काटते हुए दादी जानकी जी। साथ हैं ब्र.कु. बिमला, ब्र.कु. रानी,बिहार, ब्र.कु. हंसा व अन्य।

नूर कम्पाउण्ड-गया। आध्यात्मिक कार्यक्रम व चैतन्य झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए चिकित्सा पदाधिकारी नवनीत बिहारी शरण, एडवोकेट सुरेन प्रसाद, ब्र.कु. शीला व अन्य।

फतेहगढ़-उ.प्र.। बिग्रेडियर सलीम आसिफ की धर्मपत्नी मोना आसिफ को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन।

हाथरस। वसुन्धरा ग्रुप द्वारा वसुन्धरा पुरम कॉलोनी में आयोजित 'तनाव मुक्त, स्वस्थ खुशनुमा जीवन' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. सविता, माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. मनोज व अतिथिगण।

नूह-हरियाणा। ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् साधवी मीरा को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. संजय।

हाथरस-उ.प्र.। बी.एस.एल. इंटरनेशनल स्कूल में 'शिक्षा में श्रेष्ठता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. रामनाथ,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रानी, स्कूल की प्राचार्या सुशिया पुण्या व अन्य।

सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य - महान तप

विद्वान कहते हैं कि ब्रह्मचर्य सबसे बड़ी तपस्या है। यही सबसे बड़ा पुण्य भी है। तराजू के पलड़े में एक ओर चारो वेद व दूसरी ओर ब्रह्मचर्य हो तो भी ब्रह्मचर्य का पलड़ा भारी ही रहेगा। इसे सबसे बड़ा तप कहने का कारण यही है कि पहले मनुष्यों को इसमें कष्ट होता है तथा फिर भासता है आनंद। मनुष्यों को अपनी सभी इच्छाओं को पराजित करना होता है। दूसरों को सांसारिक सुख भोगते देख, अपने झुकाव को बलपूर्वक, ज्ञानपूर्वक रोकना होता है। इसलिए यह बड़ा भारी त्याग व बड़ा भारी तप है। निःसंदेह जब चारो ओर काम की क्षणिक आनंदकारी सरिता बह रही है, वहाँ लाखों में से कोई एक वीर उसका परित्याग करे , यह गायन योग्य महावीरता है। जहाँ माया ठगली रंग-बिरंगे रूप बनाकर लुभाने के लिए तत्पर हो, वहाँ से मुँह फेर लेना महान त्याग है। जहां पाश्चात्य देशों में मनोवैज्ञानिकों ने काम को स्वीकृति दी हो, वहाँ इससे दूर हो जाना, विज्ञान को महान चुनौती देना है।

परंतु अनेकों ने यह चुनौती दी है, क्योंकि सामने खड़ा है सर्वशक्तिवान भगवान, जिसके बुलावे पर लाखों नर-नारी संसार की परवाह न करते हुए इस पवित्र गंगा में कूद पड़े हैं। जिन्होंने यह साहस किया है, वे ही संसार के श्वास तुल्य हैं, उनका ही बोलबाला होगा। वही पूज्य आत्माएँ होंगी और उन्हीं के भाग्य पर समस्त विश्व गर्व करेगा। परन्तु जो दुर्भागे, भगवान को छोड़कर माया के प्यार में राह भूल गए, ऐसी कमज़ोर आत्माओं को विनाश की चक्की में कष्ट पाते देखकर संसार भी रहम करेगा कि देखो ये भी कैसे बुद्धिहीन थे जिन्होंने दैहिक प्यार की स्वार्थता को न पहचानकर द्वार पर आए भाग्य को भी लात मार दी।

जो शक्तिशाली मनुष्य कामुक भावनाओं को त्यागकर योगयुक्त जीवन जीता है, इस मार्ग में आई बाधाओं को हिम्मत से पार कर जाता है और संसार के रोके नहीं रुकता, उसका यह त्याग उसके लिए महान तेज बन जाता है। जिस तेज की चमक मनोवैज्ञानिक और कुरीतियों में फंसे लोगों की मान्यताओं को झूठा सिद्ध करेगी। तो हे ब्रह्मा वत्सों ! इस महान व्रत को अपनाकर जिस तपस्या का आपने शुभारम्भ किया है, उससे पीछे न हटो। संकल्पों में निर्बलता नहीं आने दो। यह न भूलो कि तुम्हारे साथ स्वयं सर्वशक्तिवान शिव बाबा है, उनकी ताकत आपके पास है । तुम अपनी तपस्या में अवश्य ही सफल होंगे।

सावधान रहो

जैसे तपस्वियों के सामने माया भिन्न-भिन्न रूप रखकर आती थी, सीता के समक्ष रावण साधू बनकर आया, वैसे ही तुम महान तपस्वियों के सामने भी काम की माया विभिन्न रूप रचकर आएगी। परन्तु तुम्हारे तप व वैराग्य की अग्नि में वह भस्म हो जाए। वह तुम्हें अपनी ओर आकर्षित न कर ले। आगे चलकर अनेक तमोप्रधान रूहें तुम्हारे पास आएंगी। वे तुम्हें झूठा प्यार दिखाएंगी और कहीं तुम उनका कल्याण करने के बहाने रहमदिल बनकर नष्ट न हो जाओ। याद रखो तुम दाता हो, तुम्हें किसी का भी प्यार स्वीकार नहीं करना है। तुम्हारा दया भाव कहीं तुम्हें निर्बल न बना दे, यह याद ज़रूर रखना है। क्योंकि इस तमोप्रधान प्यार में बड़ा ही आकर्षण है, यह तपस्वियों की तपस्या को नष्ट करने वाला है।

जब तुम्हारे पास सम्पूर्ण अपवित्र आत्माएं आएं तो याद करो कि मुझे इन्हें पवित्रता की दृष्टि देकर पवित्रता का बल देना है न कि इनकी ओर आकर्षित होना है। मैं पवित्रता का अवतार हूँ, मेरे पास जो भी अपवित्र भावनाओं से आएगा, वह निर्मल हो जाएगा। यह शुद्ध स्वमान रहे। इस प्रकार अपनी स्वस्थिति में रहने से दूसरों का प्रभाव आप पर नहीं पड़ेगा, बल्कि आपके पवित्र प्रकम्पन उनके चित्त से काम की अग्नि को बुझाएंगे।

आपको ज्ञात हो कि दूसरों का प्यार आपकी काम वृत्ति को क्षणिक ही तृप्ति देगा और पीछे प्रारम्भ होगी पश्चाताप की कहानी। इसलिए इस प्यार की नश्वरता को क्षण भंगुरता ही समझो और इसमें अटककर अविनाशी ईश्वरीय प्रेम से वंचित न रहो क्योंकि ईश्वरीय प्रेम केवल एक बार ही मिलता है, जबकि मनुष्यों का प्रेम तो जन्म-जन्मान्तर प्राप्त होता आया है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि हमें मनुष्यों से प्रेम नहीं रखना है। परन्तु हमें उनके प्रेम में भटककर प्रभु प्रेम के महत्व को भूल नहीं जाना है। ध्यान रहे कि दूसरों का प्यार, कहीं हमारा लगाव, बुद्धि को अस्थिर न कर दे।

साधना के पथ पर चल पड़े, तो साधक को अवश्य ही सावधान रहना होगा। आप जिस उद्देश्य को लेकर चले हैं, वहां किसी और के साथ की जरूरत ही नहीं, क्यों, क्योंकि स्वयं सर्वशक्तिवान आपके साथ है। इसकी स्मृति ही आपको आगे बढ़ा देगी। बस आपको ध्यान रखना है कि हमारा उद्देश्य पूज्य बनने का है, और इसकी नींव सम्पूर्ण पवित्रता ही हो सकती है।

सूरतगढ़-राज.। पाँच दिवसीय `गीता ज्ञान रहस्य प्रवचन माला' के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं विधायक राजेन्द्र भादू, ए.डी.एम. हरविन्दर शर्मा, ब्र.कु. वीणा,सिरसी व ब्र.कु. रानी।

पटना-बिहार। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के उद्घाटन के पश्चात् किसान आयोग के अध्यक्ष सी.पी. सिन्हा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरला दीदी,गुज. व ब्र.कु. संगीता। साथ हैं अर्पणा सिंह,बाल अधिकार आयोग की सदस्या।

प्रतापनगर-राज.। तारक मेहता टी.वी. सीरियल के आर्टिस्ट सोडी एवं अय्यर के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. शिवाली, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. मधु व अन्य।

जयपुर-बापूनगर। बैंक ऑफ बड़ौदा में 'तनावमुक्त जीवन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में मुख्य प्रबंधक मेहरा जी, ब्र.कु. जयंती, ब्र.कु. पदमा व अन्य अधिकारीगण।